बच्चों में संस्कार निर्माण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

बच्चे देश के भविष्य होते हैं। बच्चों को जीवन खुली किताब की तरह होता हें। उस किताब में क्या लिखना है यह परिवार तय करता है। अर्थात बच्चे का निर्माण कैसे करना है यह परिवार पर निर्भर करता है। जैसे एक किसान वर्षा होने पर बीज बपन करता है तो प्रकृति के संयोग से बीज को स्वस्थ पौधा बनने में समय नहीं लगता। वृक्ष के रूप में बच्चा भी समाज को छाया और फल देता है। बच्चों में प्रतिभा छिपी रहती है उसे जागृत करनी पड़ती है। जैसा संसकार बच्चों में डाला जाएगा वह वैसा ही बन जाएगा। परिवार के सदस्यों को यह ध्यान रखना चाहिए कि जैसा हम आचरण करेंगे वैसा बच्चा सिखेगा। इसीलिए बच्चों के सामने कभी भी गाली–गलौच नहीं करनी चाहिए। बच्चों के सामने नकारात्मक बात नहीं करनी चाहिए। इन सब का संस्कार बच्चों पर पड़ता है। माता बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। बच्चा माता से जीवनयापन का गुण सीखता है। बोलना, पढ़ना, लिखना, चलना, एक दूसरे के साथ व्यवहार करना, बड़ों का सम्मान और छोटों के साथ प्रेम की भावना करना ये सब बातें बच्चे अपने परिवार में सिखते हैं। प्रकृति से हमें बहुत सीख मिलती है। अपना कार्य स्वयं करने की प्रवृत्ति होनी चाहिए– जल्दी सोना, जल्दी उठना, समय से कार्य करना ये सब बातें बच्चों के निर्माण में बहुत उपयोगी होती है। बच्चों के सामने महापुरूषों के चरित्र को प्रस्तुत करना चाहिए। महान बनने के गुण सिखाने चाहिए। इससे बच्चों में अच्छे गुणों का विकास होता है।

माता बच्चे का निर्माण करती है। इसीलिए माता को बच्चों की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। पाठशाला में गुरु के द्वारा बच्चों को शिक्षा दी जाती है और वह शिक्षा बच्चे के जीवन निर्माण में काम आती है। माता बच्चें में संस्कार डालती हैं। माता के द्वारा दिया गया संस्कार नीवं का कार्य करता है। मानव जीवन की तीन अवस्थाएं है– बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था। बाल्यवास्था मानव जीवन की वह अवस्था है जिसमें जीवन निर्माण होता है। विकास और ह्रास के बीज वपन का कार्य इसी अवस्था में किया जाता है। विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो संसार के प्रत्येक जीव में पाई जाती है। परिवार में नए बच्चे का जन्म होना परिवार के

लिए बहुत खुशी की बात होती है और यह सभी के लिए एक नए सफर की शुरुआत होती है। माता नौ महीने तक बच्चे को अपने गर्भ में धारण करती है। माता की हर प्रवृत्ति का प्रभाव उदरस्थ बच्चे के ऊपर पड़ता है। गर्भ के समय माता को अच्छी–अच्छी कहानियों को सुनना, सदुपदेश सुनना, अच्छा भोजन करना और स्वस्थ और मस्त रहना अपेक्षित है। क्योंकि माता के द्वारा खाया गये पदार्थ की परिणति जब रस रूप में होती है तो उससे बच्चे को भी ऊर्जा मिलती है और बच्चा भी स्वस्थ रहता है। पैदा होने के बाद बच्चे का लालन–पालन माता बड़े प्यार से करती है। हालांकि बच्चा खाना खाने, सोने, रोने और डायपर गीले करने के अलावा कुछ नहीं करता, दरअसल वह नई दुनिया में स्वयं का तालमेल बिठाता है और उसके बारे में जानकारी हासिल करता है। प्रत्येक बच्चा विलक्षण होता है और बच्चों के विकास की गति में भिन्नता होना, आमतौर पर आम बात है। यदि बच्चे के विकास में कुछ कम या अधिक समय लग रहा है अथवा बच्चा किसी चरण में कुछ क्षमताओं को हासिल करने में विफल रहता है, तो ज्यादा चिंतित होने की जरूरत नहीं। इसके लिए केवल थोड़ा विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। बच्चे स्वतंत्र खेल प्रदर्शित करते हैं। ये वयस्कों के साथ अधिक संतुष्ट रहते हैं तथा उनके साथ सामाजिक सम्पर्क रखने के प्रति अधिक रूचि दर्शाते हैं। पूर्व बाल्यावस्था के आरम्भ में, बच्चे समानांतर खेल का संरूप प्रदर्शित करते हैं अर्थात् दो बच्चे साथ रहकर भी स्वतंत्र रूप से (स्वान्तःसुखाय) खेल खेलते हैं। 'स्वतंत्र खेल' के पश्चात् सहचारी खेल' का संरूप दिखता है तथा बालक में आधारभूत सामाजिक अभिवृत्तियाँ विकसित होती हैं। इस अवस्था के प्रमुख सामाजिक व्यवहार है– अनुकरण, प्रतिस्पर्धा, नकारवृत्ति, आक्रामकता, कलह, सहयोग, प्रभावित, स्वार्थपरता, सहानुभूति तथा सामाजिक अनुमोदन इत्यादि। बाल्यावस्था में बालकों में विभिन्न सामाजिक व्यवहार जैस नेतृत्व शैली, पठन–पाठन, मनोरंजन इत्यादि प्रविधियों के माध्यम से प्रदर्शित होते हैं। सामाजिक व्यवहारों के विकास का क्रम उत्तर बाल्यावस्था में भी जारी रहता है। इस अवस्था में बालक प्रायः समूहों का निर्माण करते हैं तथा समूह में अपनी अन्तः क्रिया करते हैं जिससे उनकी विकास गति अबाध रूप से चलती रहती है। इस अवस्था में बालक सभी सामाजिक व असामाजिक व्यवहार जैसे– खेल, आपसी सहयोग प्रदर्शित करना, लोगों को तंग करना, तम्बाकू खाना, भद्दे या गंदे वार्तालाप

करना इत्यादि। बालक मित्रों के व्यवहारों से अत्यधिक प्रभावित रहते हैं तथा अपने सामाजिक स्वीकृति को मित्र की स्वीकृति से जोड़ कर देखते हैं। इसी अवस्था में नेतृत्व के गुण का विकास होता है। अभिमन्यु ने चक्रव्यूह तोड़ने की क्रिया जब वह गर्भ में था, तभी सीख ली थी। वह चक्रव्यूह को वहीं तक तोड़ सका जहाँ तक उसने गर्भ में तोड़ना सीखा था। शिक्षण और प्रशिक्षण माता के गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाता है। अतः बच्चों के संस्कार निर्माण में सावधानी बरतनी चाहिए।